Answer:

मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी 'मलबे का मालिक' के अंतर्गत सामाजिक और राष्ट्रीय परिपेक्ष्य की आड़ में व्यक्तिगत स्वार्थ की वृत्ति किस प्रकार बसे हुए घर को तहस- नहस कर मलबे में परिवर्तित कर देती है, यह बताया है।

विभाजन की त्रासदी झेल रहा देश दंगों की ज्वाला से सुलग रहा था । ऐसे समय रक्खा पहलवान जैसे निकम्मे और नाकारा लोग मजहब के ठेकेदार बनकर अपने स्वार्थ साधने हेतु किस प्रकार चिराग जैसे मेहनतपरस्त पारिवारिक लोगों का निर्मम अंत कर देते हैं। कहानी में यही दर्शाया गया है। यही कहानी की मूल संवेदना भी है।

Scanned with CamScanner

कैसे? 'तुम लोग उसके पास थे, सबमें भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी, अगर वह चाहता, तो वह तुझमें से किसी के घर में, ही छिप सकता था? उसे इतनी भी समझ नहीं आती?' स्थिति का कैसा क्रूर मज़ाक है कि साढ़े सात साल बाद भक्षक से ही रक्षक के व्यवहार की अपेक्षा, अपेक्षा नहीं गहरा विश्वास है। उसके रहते ही तो चिराग को यह विश्वास था कि 'कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।' विश्वास की यह आस्था उस परिवार को समाप्त कर देने वाले रक्खे को भी भीतर तक हिला जाती है और वह विचलित हो कर 'हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तू ही है, तू ही है!' पुकार उठता है। गनी का यह कहना 'मैंने तुमको देख लिया, तो चिराग को देख लिया' रक्खे को भी भिगो देता है। वह मानो अपनी गलती का अहसास करता हुआ जाते हुए गनी को दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता है नमस्कार करता है। गनी के स्वागत के समय और अब विदा देते समय की रक्खे की ये भिन्न मुद्राएं कहानी में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। लेखक कहीं भी रक्खे के बदले मिजाज़ का वर्णन नहीं करता अपितु सर्वत्र उसकी अभिव्यक्ति, विभिन्न क्रिया-कलापों के द्वारा करता है। इस प्रकार कहानी में सांप्रदायिक एकता की जो विचार-सारणि आदि से अंत तक अनुस्यूत है, वह कहीं भी आरोपित रूप में नहीं आती अपितु कहानी के बीच अंत:सलिला की तरह प्रवाहित होती है।

इसके पश्चात् राकेश का कहानीकार बहुत कुशलता से यह विचार करता है कि रक्खे अपने व्यवहार में इतना निर्मम क्यों हुआ? गनी की बीवी जुबेदा की अच्छाई के साथ-साथ कहानीकार ने रक्खे के लिए यह वाक्यांश दिया है, 'रक्खे मरदूद का घर, न घाट, इसे किस मां, बहन का लिहाज़ था?' इसके माध्यम से वह कहना चाहता है कि उस समय, भारत-पाक-विभाजन के समय, हुए दंगों में सामान्य व्यक्ति, तो अपने व्यवहार में ठीक ही रहे, ये रक्खे पहलवान जैसे ही लोग थे जिन्होंने मार-काट के जघन्य कार्य किये थे। क्या किसी भी समय, चाहे वह पंजाब की आतंकवादी स्थितियों की बात हो अथवा फिर दिल्ली, आदि में इंदिरा हत्याकांड के पश्चात् हुए भीषण हत्याकांड हों, समाज के असामाजिक तत्त्वों का चेहरा रक्खे पहलवान जैसा ही नहीं होता? अपने इसी संदर्भ में यह कहानी किसी भी समय-संदर्भ में पुरानी नहीं पड़ेगी। जब तक समाज में रक्खे पहलवान जैसे लोग होंगे, क्या सांप्रदायिकता के विष को समाप्त किया जा सकता है?

कहानी का अंत भी बड़ा प्रभावी और प्रतीकात्मक हैं। रक्खे पहलवान की उपलब्धि क्या है, यह सवाल कहानी के अंत में उठाया गया है। उस जघन्य कार्य को करने के पश्चात् उसकी आत्मा गनी मियां के जाने के बाद उसे कचोटती है। वह गनी के मकान को तो पा ही नहीं सका क्योंकि उसे उस जैसे असामाजिक तत्वों ने जला दिया था, शेष रह गया था मकान का मलबा, पर क्या रक्खे इस मलबे का भी मालिक सिद्ध हो सका? उसकी प्रतिद्वंद्विता होती है अधिकार की इस लड़ाई में एक आवारा-से कुत्ते से। मलबे से वह पहलवान उस कुत्ते को भी नहीं भगा सका। वस्तुत: कुत्ता उसे बहुत दूर तक खदेड़ देता है और अंत में इस मलबे पर काबिज़ होता है वह कुत्ता ही—'कान झटककर मलबे पर लौट आया और वहां कोने में बैठ कर गुर्राने लगा।' यह है मानव के कमीनेपन पर एक टिप्पणी कि मलबे का असली मालिक कुत्ता ही है या जो ऐसे मलबों को हथियाते हैं वे कुत्ते हैं! बहुत सुंदर अंत! 'नयी कहानी' को निष्कर्षविहीन अंत की कहानियां कहा गया है किंतु यहां निष्कर्षपूर्ण अंत है किंतु वह एक आरोपित आदर्श के रूप में नहीं। लगता ही नहीं कि कहानी में कहीं आदर्श स्थापित हुआ है। कुत्ते का गुर्राहट भरा आधिपत्य मानवीय सोच पर दस्तक देता है, उसे सोचने को विवश करता है कि इंसान जो हैवानियत के काम करता है, उसकी उपलब्धि क्या है!

कथ्य और शिल्प तथा भाषा-संरचना सभी दृष्टियों से 'मलबे का मालिक' एक अत्यत सशक्त कथा है।

Scanned with CamScanner

Posted On May - 19 - 2012

मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक'

पुष्पपाल सिंह

मोहन राकेश की प्रतिभा कहानी, नाटक और उपन्यास —सभी क्षेत्रों में अपने कांचन-स्पर्श से एक नयी छाप छोड़ती है। अपने दूसरे संग्रह 'नये बादल' की भूमिका में वे स्पष्टत: स्वीकारते हैं कि उन्होंने और अपनी कथा-पीढ़ी ने 'यथार्थ की अपेक्षाकृत ठहरे हुए अर्थात् वैयक्तिक और पारिवारिक रूप को अपनी रचनाओं में अधिक स्थान दिया है।' किंतु बहुत दूर तक कलाकार केवल ऐसी ही रचनाएं नहीं कर सकता जो किसी एक वैयक्तिक धारा की ही हों और अपने सामाजिक संदर्भों से कटी हुई रह सकें। फलत: राकेश के यहां भी ऐसी कहानियां हैं जो अपने समय-संदर्भों से गंभीर रूप से जुड़ी हुई हैं। इन कहानियों में 'मलबे का मालिक' तथा 'परमात्मा का कुत्ता' विशेष रूप से रेखांकित की जा सकती हैं। राकेश की इस कहानी को विभाजन की विभीषिका पर लिखी हिंदी की ही नहीं अपितु भारतीय भाषाओं की अत्यंत श्रेष्ठ कहानियों में नि:संकोच रूप से रखा जा सकता है। राकेश की यह कहानी इसलिए भी बहुत सशक्त बन सकी है कि इसमें उनकी व्यक्तिवादी दृष्टि जो सम्बंधों की बारीकियों का बहुत सूक्ष्मता से अंकन करती है उनकी सामाजिक दृष्टि से संयुक्त हो जाती है, इसलिए यहां हिंदू-मुस्लिम समस्या, जो भारत-पाक विभाजन का कारण बनी, जैसी समस्या पर अंगुली रखी गयी है और साथ ही गनी मियां की भावनाओं का इतना मार्मिक अंकन हो सका है। किसी भी कलाकार के रचना-कर्म का यह स्पृहणीय क्षण है जब वह एकसाथ ही मानव-हृदय की भावनाओं का ऐसा संवेदनात्मक चित्रण करता हुआ अपने समय की ज्वलंत समस्या से भी जूझता है। अपने इन्हीं दोनों गुणों के कारण 'मलबे का मालिक' आज भी उतनी ही आकर्षक लगती है। कहानी का प्रकाशन 1957 में प्रकाशित राकेश के दूसरे कथा-संग्रह 'नये बादल' में हुआ था, यह कहानी कई बार, न जाने कितनी बार पढ़ी है किंतु कभी पुरानी नहीं लगती।

लेखक कहानी का प्रारंभ करते-करते ही यह दृष्टि दे देता है कि आज भी भारत-पाक के सामान्य निवासियों के लिए लाहौर और अमृतसर उतने ही अपने हैं जितने विभाजन के पूर्व थे। धरती का विभाजन केवल दो देशों की राजनीतिक सीमाएं ही अलग कर सका, दिलों के नक्शे पर कोई खरोंच नहीं आयी। हिंदू और मुस्लिम के बीच उस सांप्रदायिक वहशीपन में जो एक अविश्वास उपजा था, लेखक उसकी झलक भी चुपके से दे जाता है जब गली की लड़की मुसलमान का भय दिखाकर रोते बच्चे को चुप कराती है। विभाजन के कारण बदली हुई सामाजिक स्थितियों का एक रंग यह भी है। गली में मुसलमान के आने की ख़बर पर मची भगदड़ इसी की अभिव्यक्ति है।

कहानी की संवेदना का दूसरा रूप तब प्रारंभ होता है जब मनोरी गनी मियां को उसके मकान के मलबे के पास लाकर खड़ा कर देता है। जली हुए चौखट को पकड़ कर गनी का बैठ जाना और उन्हीं दिनों कत्ल किये गये अपने बेटे चिरागदीन की याद, मलबे की लकड़ी का भुरभरा जाना, और उसके रेशों का झड़कर बिखर जाना, उस समय के 'सुंदरतम' के ढहने का प्रतीक बन जाता है। बूढ़े गनी के परिवार के कत्ल किये जाने के दृश्य को पूर्व दीप्ति रूप में कहना और गनी का अपने बेटे चिरागदीन और बेटियों किश्वर तथा सुलताना को याद कर-करके बिलखना—सब

Scanned with CamScanner